अंक 285 वर्ष 58

भाषा

जुलाई–अगस्त 2019

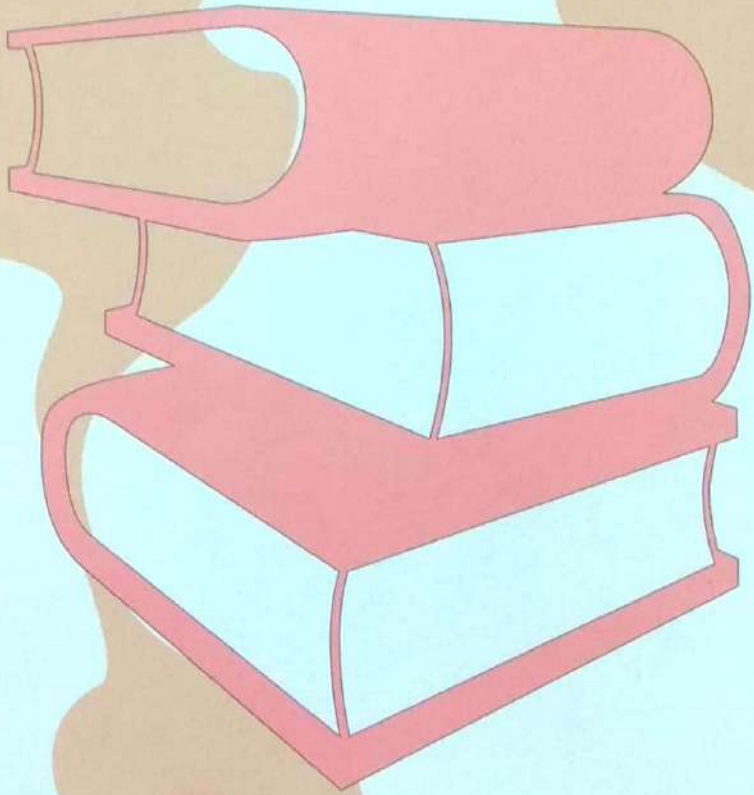

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

Skill India

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय

आलेख

1.	नवगीत के सर्जनात्मक आयाम	डॉ. अनिल कुमार	9
2.	21वीं सदी का हिंदी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. संदीप रणभिरकर	18
3.	भारतीय लोकगीतों का नया अवतार : चटनी संगीत	डॉ. चंद्रकांता किनरा	24
4.	गिरिजाकुमार माथुर : चिंतन की एक स्वस्थ परंपरा	सुरेश धींगड़ा	28
5.	हिंदी के काव्य विकास में जुड़ा हाइकु-एक नया आयाम	डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ	33
6.	राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता	डॉ. एम. शेषन्	36
7.	प्रगतिवाद : छायावाद विरोधी तेवर	आचार्य डॉ. केशवराम शर्मा	41
8.	आधी आबादी और अरुण कमल की कविता	सुश्री प्रीति प्रकाश डॉ. अनुशब्द	45

धरोहर

9.	रश्मिरथी (प्रथम सर्ग)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	50

कहानी

10.	एक राजनैतिक कहानी (तेलुगु कहानी)	एम. वेंकटेश्वर	54
11.	पांडे सदन (हिंदी कहानी)	इंदिरा दाँगी	61
12.	सर्जा – राजा (हिंदी कहानी)	कृष्णा कदम	72

कविता

13.	स्वतंत्रता दिवस: एक अभिव्यक्ति (नेपाली/हिंदी)	मूल एवं अनुवाद : : इंद्र बहादुर गुरुङ	76
14.	नवकलेवर (ओड़िआ/हिंदी)	मूल : वासुदेव सुनानी अनुवाद : अजय कुमार पटनायक	78
15.	हिम्मत (संथाली/हिंदी)	मूल एवं अनुवाद : किरण कुमारी हाँसदाक	82

Scanned with CamScanner

आधी आबादी और अरुण कमल की कविता

सुश्री प्रीति प्रकाश
डॉ. अनुशब्द

मैं उसे इतना डांटा
गालियाँ दी
दो तीन बार पीटा भी
फिर भी चुपचाप सारा काम करती गई.....
वह कभी बोली क्यों नहीं
एक बार भी बोलती.....

समकालीन हिंदी कविता में अरुण कमल का महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। रचना और आलोचना दोनों ही क्षेत्रों में उनकी गहरी पैठ है। एक से बढ़कर एक उनके कुल पाँच कविता संग्रह हैं- 'सबूत', 'नए इलाके में', 'पुतली में संसार', 'अपनी केवल धार' और 'मैं वो शंख महाशंख'। इनके काव्य संग्रहों का पाट बहुत चौड़ा है और संवेदना की गहराई तो उनमें है ही। 'गोलमेज' और 'कविता और समय' उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा के प्रतिमान है। जिनमें समय-समय पर उनके लिखे आलेखों का संकलन है। उनकी कविताओं का स्वर समाज और राजनीति के कई पहलुओं को बड़ी संजीदगी के साथ छूता है। राजनीति का राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संदर्भ हो या समाज का पिछड़ा वर्ग हो सब उनकी कविताओं में स्थानीय विशेषताओं के साथ उपस्थित है। उनकी कविताओं में स्त्री पात्र समाजानुकूल अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती है।

उपर्युक्त कविता 'एक बार भी बोलती' वह यक्ष प्रश्न खड़ा करती है जिसके उत्तर की प्रतीक्षा शायद आज भी हर स्त्री को है। आखिर वह कौन सा सामाजिक ढांचा है जो महिलाओं को इतना कमजोर, इतना बेबस बना देता है कि वे मजबूर हो जाती है तमाम रंजो सितम के साथ जिंदगी गुजर-बसर करने के लिए। कई बार तो वे अपनी इस मजबूरी को अपनी नियति मान लेती हैं। अरुण कमल हिंदी कविता में शोषितों और पीड़ितों के प्रतिनिधि के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कविता में समाज के वंचित वर्ग को वाणी मिलती है। "जिसका कोई प्रतिनिधि नहीं होता है उसका प्रतिनिधि कवि होता है" इस वाक्य से कवि न सिर्फ इत्तेफाक रखते हैं बल्कि इसे अपने लेखन में पूरे तरह आत्मसात करते हैं। 'यदि उनकी कविताओं में स्त्री जीवन की झलक देखने का प्रयास करें तो वहाँ भी पढ़ी लिखी और समाज के संभ्रांत वर्ग से आने वाली महिलाएँ कम मिलती हैं। अरुण कमल की कविताओं में तो ग्राम वधुएँ हैं, रोजी-रोटी की जुगाड़ में लगी निम्नवर्गीय महिला है, घर-घर जाकर काम करने वाली कुबड़ी काकी है और जिजीविषा के साथ रोजमर्रा की जिंदगी से संघर्ष कर रही औरतें हैं। अरुण कमल इन महिलाओं की समस्याओं को अपनी लेखनी से आवाज देते हैं।

प्रसिद्ध वैद्यक चरक ने लिखा था कि समस्या जहाँ उत्पन्न होती है उसका निदान भी वहीं होता है। इसलिए चरक की बात मानते हुए चूँकि महिलाओं की चुप्पी का प्रश्न अरुण कमल की कविता से सामने आया है इसलिए जवाब भी अरुण कमल की कविताओं

ISSN 0523-1418

CS Scanned with CamScanner